# HARDAYAL MUNICIPAL HERITAGE PUBLIC LIBRARY

Situated in the heart of Chandni Chowk, Hardayal Municipal Public Library (HMPL) is one of the very few oldest buildings that have been able to withstand the onslaught of modern times. This is the oldest public library of Delhi, named after the great revolutionary and freedom fighter Lala Hardayal, who was a resident of Old Delhi.

The library was set up in 1862, as part of reading club meant for the British. Englishmen coming to India used to carry a lot of books with them to read in the several month long sea journey. These books were given to the reading room called the Institute Library, which was a part of the Lawrence Institute, named after the then Viceroy of India. The building was built between 1861 and 1866. Today the building is called the Town Hall and houses the offices of the erstwhile Municipal Corporation of Delhi.

In 1902, the Library was renamed as the Delhi Public Library and shifted to the small Kaccha Bagh building with a staff of one Librarian, one clerk, one peon. It wasn't enough to accommodate its readers.

On 23rd December 1912, a bomb was hurled at Lord Hardinge while he was going on an elephant in a procession through Company Bagh, (Now known as Gandhi Maidan) but he escaped unharmed. To commemorate Hardinge's escape, a committee was formed soon after to construct a building for the Delhi Public Library under the President-ship of Rai Bahadur Lala Sheo Prasad. The committee is said to have collected Rs. 70,000/-, Khan Sahib Haji Baksh Elahi donated Rs. 14,000/-, the Maharaja of Kashmir Rs. 10,000/-, and there were various other donors. The Library was renamed as Hardinge Municipal Public Library in 1916 when it shifted to the new building with its old collection and furniture.

The name 'Hardinge Municipal Public Library' was further shortened as Hardinge Library in 1942 consequent upon an agreement between the Library and the erstwhile Municipal Committee which gave the Library the status of an autonomous body with 100% grant-in-aid from Municipal Corporation. In 1970 Hardinge Library become Hardayal Municipal Public Library.

The governance of the Library vests in a Governing body called the Managing Committee. The Mayor of the North Delhi Municipal Corporation is the ex-officio-President of the Managing Committee of the Library. There are six elected sitting members of the North Delhi Municipal Corporation and one each from south & east DMC, nominated by it to the Managing Committee. Four persons elected by the subscribers of the Library.

There are about 3123 Gazettes of India & Delhi Gazettes: those are quite useful for Govt. notifications since 1917 to 1998 and ten years five newspapers i.e. 1) Times of India, 2) The Hindustan Times, 3) Nav Bharat Times (Hindi), 4) Hindustan (Hindi), 5) Jansatta.

The library décor is antique with ancient book shelves and almirahs. It has a unique collection of more than 1,70,000 books in Hindi, English, Urdu, Arabic, Persian and Sanskrit. This is one of the few Libraries in the world with a collection of at least 8,000 rare books. The oldest book in the library is block-printed. Some of the oldest books are “A Relation of Some years, by Travaile Begvenne, 1634”, “History of the World, by Sir Walter Raleigh, (1676 to 1677)”, “Mahabharata” in Persian written by Abul Fazal Faizi etc.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on “Hardayal Municipal Heritage Public Library”.

**Credits:-**

| | | |
|---|---|---|
| Text | : | Based on the material received from proponent |
| Stamp / FDC/Brochure Cancellation Cachet | : | Smt. Alka Sharma |

भारतीय डाक विभाग
**DEPARTMENT OF POSTS INDIA**




हरदयाल म्युनिसिपल हेरिटेज पब्लिक लायब्रेरी
HARDAYAL MUNICIPAL HERITAGE PUBLIC LIBRARY

# विवरणिका
# BROCHURE

# हरदयाल म्युनिसिपल हेरिटेज पब्लिक लाइब्रेरी

चाँदनी चौक के मध्य में स्थित, हरदयाल म्युनिसिपल हेरिटेज पब्लिक लाइब्रेरी उन प्राचीनतम भवनों में से एक है जो आधुनिक समय के दुष्प्रभावों को रोकने में समर्थ रही है। यह दिल्ली की सबसे प्राचीनतम पब्लिक लाइब्रेरी है जिसका नाम महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल के नाम पर रखा गया है, जो पुरानी दिल्ली के बाशिंदे थे।

इस पुस्तकालय की स्थापना 1862 में अंग्रेजों के लिए वाचनालय क्लब के एक भाग के रूप में की गई थी। भारत में आने वाले अंग्रेज कई माह लंबी समुद्री यात्रा में पढ़ने के लिए अपने साथ बहुत सारी पुस्तकें लेकर आते थे। इन पुस्तकों को वाचनालय, जिसे इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी कहा जाता था, को दे दिया जाता था, जो लॉरेंस इंस्टीट्यूट का एक भाग थी, जिसका नाम भारत के तत्कालीन वॉयसराय के नाम पर रखा गया था। इस भवन का निर्माण 1861 और 1866 के बीच हुआ था। आज इस भवन को टाउन हॉल के नाम से जाना जाता है और इसमें तत्कालीन दिल्ली नगर निगम के कार्यालय कार्यरत थे।

1902 में, इस पुस्तकालय का नाम दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी रखा गया और इसे एक पुस्तकालयाध्यक्ष, एक लिपिक, एक चपरासी के स्टाफ के साथ छोटे कच्चा बाग भवन में स्थानान्तरित किया गया। इस भवन में अपने पाठकों के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था।

23 दिसम्बर, 1912 को लॉर्ड हार्डिंग पर उस समय बम फेंका गया जब वह कंपनी बाग़ (अब इसे गांधी मैदान के नाम से जाना जाता है) से होते हुए हाथी पर बैठकर एक जुलूस में जा रहे थे, किन्तु इसमें वे बाल-बाल बच गए। हार्डिंग के बच जाने की याद में, राय बहादुर लाला शिव प्रसाद की अध्यक्षता में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के लिए एक भवन के निर्माण हेतु एक समिति का गठन किया गया। ऐसा कहा जाता है कि समिति ने इस कार्य हेतु 70,000/- रूपए एकत्रित किए, खान साहिब हाजी बक्श इलाही ने 14,000/- रूपए और कश्मीर के महाराजा ने 10,000/- रूपए अंशदान के रूप में दिए, इसमें अन्य लोगों ने भी अंशदान दिया। इस पुस्तकालय को 1916 में पुस्तकों के अपने पुराने संकलन और फर्नीचर के साथ नए भवन में स्थानान्तरित किया गया तो इसका नाम बदल कर हार्डिंग म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी रख दिया गया। बीच में हुए करार के परिणामस्वरूप 1942 में इस पुस्तकालय और तत्कालीन नगर पालिका की 'हार्डिंग म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी' का नाम फिर से छोटा करके 'हार्डिंग लाइब्रेरी' कर दिया गया जिसमें इस पुस्तकालय को नगर निगम से शत-प्रतिशत सहायता-अनुदान के साथ एक स्वायत्त निकाय का दर्जा प्रदान किया गया। 1970 में हार्डिंग लाइब्रेरी हरदयाल म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी बन गई।

इस पुस्तकालय के अभिशासन की शक्तियां प्रबंधन समिति नामक एक शासी निकाय में निहित हैं। उत्तरी दिल्ली नगर निगम के महापौर पुस्तकालय की प्रबंधन समिति के पदेन अध्यक्ष हैं। उत्तरी दिल्ली नगर निगम के छह निर्वाचित आसीन सदस्य हैं और एक-एक सदस्य दक्षिण तथा पूर्वी दिल्ली नगर निगम से है जिन्हें प्रबंधन समिति द्वारा नामित किया जाता है। चार (04) व्यक्ति पुस्तकालय के अंशदाताओं द्वारा चुने हुए होते हैं।

इसमें भारत और दिल्ली के लगभग 3123 राजपत्र हैं जोकि काफी उपयोगी हैं। इनमें 1917 से 1998 तक की सरकारी अधिसूचनाएं और 10 वर्ष के पाँच (05) समाचार पत्र अर्थात (1) टाइम्स ऑफ इंडिया (2) दी हिन्दुस्तान टाइम्स (3) नवभारत टाइम्स (हिन्दी) (4) हिन्दुस्तान (5) जनसत्ता शामिल हैं।

पुस्तकालय की सजावट का स्वरूप प्राचीन है। इसमें पुस्तकों की शेल्फ और अल्मारियां पुराकालीन हैं। इस पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी और संस्कृत भाषाओं की 1,70,000 से भी अधिक पुस्तकों का एक अद्वितीय संकलन है। यह पुस्तकालय 8,000 दुर्लभ पुस्तकों के संकलन वाले विश्व के चंद पुस्तकालयों में से एक है। पुस्तकालय में सबसे पुरानी पुस्तक ब्लॉक प्रिंटेड है। कुछ प्राचीन पुस्तकों में ''ए रिलेशन्स ऑफ सम पियर्स, लेखक ट्रावेल बेगवेने, 1634'' ''हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड, लेखक सर वॉल्टर राले (1676 से 1677)'', लेखक अब्दुल फजल फैजी द्वारा फारसी में रचित ''महाभारत'' आदि शामिल हैं।

डाक विभाग ''हरदयाल म्युनिसिपल हेरिटेज पब्लिक लाइब्रेरी'' पर स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार:-**

| | | |
|---|---|---|
| मूलपाठ | : | प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित |
| डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण | : | श्रीमती अलका शर्मा |


भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग | : | 500 पैसा |
| Denomination | : | 500 p |
| मुद्रित डाक टिकटें | : | 301590 |
| Stamps Printed | : | 301590 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00